1 समाजशास्त्र के उद्भव का बौद्धिक सन्दर्भ : ज्ञानोदय, फ्रान्स की क्रान्ति तथा औद्योगिक क्रान्ति

[THE INTELLECTUAL CONTEXT OF THE EMERGENCE OF SOCIOLOGY : ENLIGHTENMENT, FRENCH REVOLUTION AND INDUSTRIAL REVOLUTION]

यूरोप में सामाजिक दर्शन से समाजशास्त्र की ओर संक्रमण होने का एक प्रमुख कारण यूरोप में कुछ नयी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों का उत्पन्न होना था। पश्चिमी यूरोप के अनेक देशों की बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशाओं से यह अनुमान लगाया जाने लगा था कि यूरोप में अब एक नया युग आरम्भ होने वाला है। यहाँ पुनर्जागरण के फलस्वरूप जो नयी दशाएँ पैदा हुईं, उनकी विवेचना हम पहले ही कर चुके हैं। पुनर्जागरण के अतिरिक्त फ्रांस की क्रान्ति और इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति दो ऐसी प्रमुख दशाएँ रही हैं जिन्होंने यहाँ की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन पैदा कर दिये। फ्रांस की क्रान्ति तथा इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति तथा इनके प्रभाव को समझने से पहले यूरोप में उस नयी दशा पर विचार करना जरूरी है जिसे 'ज्ञानोदय' अथवा 'प्रबोधन' के नाम से जाना जाता है।

यूरोप में ज्ञानोदय
(ENLIGHTENMENT IN EUROPE)

अनेक विचारक यह मानते हैं कि समाजशास्त्र के विकास में ज्ञानोदय की भी एक विशेष भूमिका रही है। अंग्रेजी के शब्द 'Enlightenment' का कोई स्पष्ट हिन्दी पर्याय न मिल सकने के कारण इसे हम ज्ञानोदय, जागरण या प्रबोधन जैसे शब्द से सम्बोधित कर सकते हैं। वास्तव में ज्ञानोदय का सम्बन्ध उस अवधि अथवा काल से है जिसके अन्तर्गत उस समय की दार्शनिक विचारधारा में एक उल्लेखनीय बौद्धिक विकास एवं परिवर्तन स्पष्ट होना आरम्भ हुआ। 18वीं शताब्दी में यूरोप के सामाजिक जीवन से सम्बन्धित अधिकांश विचारों और विश्वासों को छोड़कर जब तर्क, अनुभव, उदारवादी विचारों तथा परम्परागत सत्ता की जगह वैयक्तिक स्वतन्त्रता को अधिक महत्व दिया जाने लगा तो इस काल को ज्ञानोदय के नाम से सम्बोधित किया गया। ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों में फ्रांसीसी दार्शनिक **चार्ल्स मॉन्टेस्क्यू** (Montesquieu) तथा **रूसो** (Rousseau) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ऐसा माना जाता है कि ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारक दो मुख्य बौद्धिक धाराओं से प्रभावित हुए जिनमें से एक को हम 17वीं शताब्दी का दर्शन तथा दूसरी को नये वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रभाव कह सकते हैं।

17वीं शताब्दी के दर्शन का सम्बन्ध मुख्य रूप से **रेने डेसकार्टेस** (Rene Descartes), **थॉमस हॉब्स** (Thomas Hobbes) तथा **जॉन लॉक** (John Locke) से सम्बन्धित माना जाता है। इन विचारकों ने अनेक ऐसे सामान्य सिद्धान्तों के विकास पर बल दिया जो तर्क पर आधारित हों। ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों ने इनके लेखों को पूरी तरह अस्वीकार तो नहीं किया लेकिन इस बात पर बल दिया कि विभिन्न विचार और सिद्धान्त इस तरह विकसित किये जाने चाहिए जो तार्किक होने के साथ ही वास्तविकता से सम्बन्धित हो तथा उनकी सत्यता की परीक्षा की जा सके। दूसरे शब्दों में उन्होंने आनुभविक अध्ययन और तर्क को एक-दूसरे से मिलाने पर जोर दिया। ऐसे विचारों का आधार न्यूटन द्वारा प्रतिपादित विज्ञान के कुछ नियम थे। इसके आधार पर सामाजिक जीवन को समझने के लिए भी अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग पर बल दिया जाने लगा। ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों का यह प्रयत्न रहा कि वर्तमान दशाओं में हमारे विचार वास्तविक जगत् से सम्बन्धित होने के साथ ही उपयोगी होना भी आवश्यक है। उदाहरण के

Scanned with CamScanner

लिए एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में अर्थव्यवस्था में स्वतन्त्र बाजार प्रणाली सम्बन्धी विचार देने के साथ ही श्रम-विभाजन के लाभों का विस्तार से उल्लेख किया।

सार रूप में ज्ञानोदय का सम्बन्ध इस विश्वास से है कि व्यक्ति तर्क तथा आनुभविक अध्ययन के द्वारा अपने चारों ओर की दुनिया को अधिक अच्छी तरह समझ सकते हैं तथा उस पर नियन्त्रण रख सकते हैं। इसके पीछे ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों ने यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया कि जिस तरह विभिन्न भौतिक पदार्थ अनेक प्राकृतिक नियमों से प्रभावित होते हैं, उसी तरह समाज और विभिन्न प्रकार के व्यवहार भी कुछ सामाजिक नियमों के अधीन होते हैं। इस आधार पर समाज विज्ञानियों का काम इन्हीं सामाजिक नियमों की खोज तर्क तथा आनुभविक अध्ययन के आधार पर करना है। उन्होंने यह माना कि यदि एक बार हम यह जान लें कि हमारी सामाजिक दुनिया किस तरह काम करती है तो हम पहले से अधिक अच्छी और तार्किक दुनिया का निर्माण कर सकते हैं।

तर्क पर अधिक जोर देने के साथ ही ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों ने परम्परागत सत्ता से सम्बन्धित विचारों को अस्वीकार करना आरम्भ कर दिया। जब इन्होंने परम्परागत मूल्यों और संस्थाओं पर गहन विचार किया तो यह पाया कि इस तरह की संस्थाएँ अतार्किक होने के साथ ही मानव प्रकृति से भिन्न हैं तथा मानवीय प्रगति और विकास में बाधक हैं। स्पष्ट है कि ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों का उद्देश्य नये चिन्तन के द्वारा व्यवहारों में इस तरह का परिवर्तन लाना था जिससे अतार्किक व्यवस्थाओं के प्रभाव को दूर किया जा सके। धीरे-धीरे ऐसे विचारों का प्रभाव इतना बढ़ने लगा कि साहित्य, कला तथा धर्म की विवेचना में भी विभिन्न विद्वान् तर्क और वास्तविकता को अधिक महत्व देने लगे। इस प्रकार ज्ञानोदय को एक ऐसे प्रयास के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है जिसका उद्देश्य तार्किकता के आधार पर सामाजिक घटनाओं को समझना तथा सामाजिक विकास को एक नयी दिशा देना था।

ज्ञानोदय पर रूढ़िवादी प्रतिक्रिया (Conservative Reaction to the Enlightenment)

सीडमैन (Seidman) ने लिखा है कि ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारों पर अनेक तरह की प्रतिक्रियाएँ हुईं तथा अनेक लेखकों ने ज्ञानोदय से सम्बन्धित उदारतावाद का विरोध करना आरम्भ कर दिया। जैसा कि हम बाद में स्पष्ट करेंगे कि ज्ञानोदय के पक्ष और विपक्ष में दिये जाने वाले विचारों के फलस्वरूप फ्रांस में आरम्भिक समाजशास्त्र का विकास एक ऐसे रूप में हुआ जिसमें ज्ञानोदय तथा रूढ़िवादी प्रतिक्रिया का मिश्रित रूप देखने को मिलता है।

ज्ञानोदय का सबसे व्यापक विरोध फ्रान्स के उन कैथोलिक विचारकों द्वारा किया गया जिनमें **लुइस डि बोनाल्ड** (Louis de Bonald) तथा **जोसेफ डि मेस्त्रे** (Joseph de Maistre) के नाम प्रमुख हैं। इन विचारकों ने केवल ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारों का ही विरोध नहीं किया बल्कि, उस समय के फ्रान्स की राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध किसी भी तरह की क्रान्ति का भी विरोध किया। **बोनाल्ड** ने यह स्पष्ट किया कि ईश्वर ही समाज का वास्तविक स्रोत है, अत: परम्परागत धार्मिक विश्वासों की तुलना में तर्क का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने यह भी लिखा कि समाज का निर्माण ईश्वर के द्वारा होने के कारण मनुष्य द्वारा इसमें किसी भी तरह का परिवर्तन लाना खतरनाक हो सकता है। इसी तरह उन्होंने राजतन्त्र को बनाये रखने की जरूरत पर भी बल दिया। **इरविंग जैटलिन** (Irving Zeitlin) ने लिखा है कि ज्ञानोदय का रूढ़िवादी विरोध इस आधार पर किया गया कि सामाजिक जीवन की व्यवस्था के लिए अतार्किक व्यवहारों का बना रहना आवश्यक है। उनके अनुसार परम्परा, कल्पना, भावना तथा धर्म वे उपयोगी आधार हैं जिनसे हमारा सामाजिक जीवन सुरक्षित रहता है। इस दृष्टिकोण के द्वारा रूढ़िवादी विचारकों ने सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था में किसी भी तरह की उथल-पुथल को एक विनाशकारी शक्ति के रूप में देखना आरम्भ कर दिया। **जैटलिन** ने कुछ ऐसी मान्यताओं का भी उल्लेख किया है जिनके आधार पर रूढ़िवादी विचारकों द्वारा ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारों का विरोध किया गया।

(1) ज्ञानोदय विचारक व्यक्ति की स्वतन्त्रता और उसके अध्ययन पर अधिक बल देते हैं जबकि रूढ़िवादी अथवा परम्परावादी विचारकों ने समाज तथा कुछ दूसरी वृहत् सामाजिक घटनाओं के अध्ययन पर अधिक बल दिया। उनके अनुसार समाज का अपना अलग अस्तित्व होता है तथा इसके विकास के अपने

Scanned with CamScanner

अलग नियम हैं जिनका अतीत से गहरा सम्बन्ध होता है। वास्तव में समाज ही समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति को बनाता है।

(2) समाज के अन्तर्गत व्यक्ति को सबसे आधारभूत तत्व नहीं माना जा सकता। समाज का निर्माण करने वाले अंगों में विभिन्न स्थितियों, भूमिकाओं, सम्बन्धों, संरचना और संस्थाओं का विशेष स्थान है। व्यक्ति तो केवल समाज में इन अंगों के अनुसार ही व्यवहार करता है।

(3) समाज का निर्माण जिन अंगों से होता है वे सभी एक-दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। इसका अर्थ है कि किसी भी एक अंग में होने वाले परिवर्तन से दूसरे अंग भी प्रभावित होते हैं और इस प्रकार समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था बिगड़ने लगती है। इसका तात्पर्य है कि सामाजिक व्यवस्था में किसी तरह का भी परिवर्तन करने के लिए बहुत सावधानी की जरूरत होती है।

(4) परम्परावाद के अनुसार परिवर्तन समाज के लिए हानिकारक होने के साथ ही इसके निर्माणक अंगों और व्यक्तियों के लिए भी हानिकारक होता है। किसी समाज की संस्थाएँ जब विघटित होने लगती हैं तो व्यक्तियों के जीवन में भी समस्याएँ बढ़ने लगती हैं जिससे सामाजिक अव्यवस्था की सम्भावना पैदा हो जाती है।

(5) अनेक छोटी-छोटी इकाइयाँ जैसे परिवार, पड़ोस, अनेक धार्मिक तथा व्यावसायिक समूह जितने समाज के लिए आवश्यक हैं उतने ही आवश्यक व्यक्ति के लिए भी हैं। यहीं इकाइयाँ आधुनिक समाजों में भी व्यक्तियों के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं।

(6) वर्तमान युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा नौकरशाही के बढ़ते हुए प्रभाव के रूप में जो सामाजिक परिवर्तन सामने आये हैं, वे समाज को अव्यवस्था की ओर ले जा रहे हैं। इस दशा में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को एक विघटनकारी दशा के रूप में देखा जा सकता है।

(7) तर्क पर आधारित समाज की बात आकर्षक तो मालूम होती है लेकिन गहराई से देखने पर स्पष्ट होता है कि बहुत से अतार्किक व्यवहार जिनका सम्बन्ध हमारे विभिन्न अनुष्ठानों, उत्सवों और पूजा के तरीकों आदि से होता है, समाज के अस्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

(8) रूढ़िवादी विचारकों ने ज्ञानोदय से सम्बन्धित समानता और उदार मूल्यों का इस आधार पर भी विरोध किया कि समाज के लिए संस्तरण पर आधारित व्यवस्था अधिक उपयोगी है। समाज में विभिन्न व्यक्तियों की प्रस्थिति और उन्हें मिलने वाले पुरुस्कार की भिन्नता होने से ही सामाजिक जीवन अधिक व्यवस्थित रहता है।

वास्तविकता यह है कि परम्परावादी विचारकों ने ज्ञानोदयी विचारधारा के विरुद्ध जो तर्क दिये, उसका फ्रान्स के आरम्भिक समाजशास्त्रीय विकास पर कुछ प्रभाव अवश्य हुआ, यद्यपि ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारों जैसे तर्क और आनुभविक अध्ययनों को भी महत्व दिया जाने लगा। इस सन्दर्भ में सीडमैन (Seidman) ने लिखा है कि ज्ञानोदय तथा रूढ़िवादी विचारधारा के बीच हमें एक निरन्तरता और समन्वय भी देखने को मिलता है। पहला यह कि ज्ञानोदय के अन्तर्गत जिस वैज्ञानिक चिन्तन को महत्व दिया गया उसे कुछ सीमा तक परम्परावादी विचारकों ने भी मानना आरम्भ कर दिया। दूसरा तथ्य यह है कि ज्ञानोदय से सम्बन्धित विचारकों ने व्यक्ति के साथ समूहवादी अध्ययन करने को भी महत्व देना आरम्भ किया। तीसरे, दोनों ही धाराओं से सम्बन्धित विचारकों ने वर्तमान समाजों की समस्या के अध्ययन में रुचि लेना आरम्भ किया। इसके बाद भी यह सच है कि फ्रांसीसी परम्परा में समाजशास्त्र का जो रूप विकसित होना आरम्भ हुआ उसमें तर्क, अनुभववाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा परिवर्तन पर आधारित अध्ययनों का महत्व बढ़ने लगा। इस प्रकार ज्ञानोदय एक ऐसा आधार सिद्ध हुआ जिसके प्रभाव से 18वीं शताब्दी के अन्त में फ्रान्स की क्रान्ति हुई तथा इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो गयी।

यूरोप में ज्ञानोदय के फलस्वरूप वहाँ के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन में अनेक ऐसे परिवर्तन उत्पन्न होने लगे जिनके कारण एक नये चिन्तन को प्रोत्साहन मिलने लगा। इन नयी शक्तियों को संक्षेप में निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है :

(1) **सामाजिक व्यवस्था का नया रूप**—यूरोप में 18वीं शताब्दी के अन्तिम समय तक सामाजिक व्यवस्था का रूप बहुत परम्परागत था। सामाजिक व्यवस्था पर बड़े-बड़े सामन्तों और पादरी वर्ग का प्रभुत्व

Scanned with CamScanner